# ECHO OF HIS CALL

## बुलावे की प्रतिध्वनि

HINDI

India's National Spiritual Newspaper

₹ 10/-

Published monthly in ENGLISH, TAMIL, MALAYALAM, TELUGU, HINDI, KANNADA, MARATHI, BENGALI, GUJARATI, ODIYA, ASSAMESE, PUNJABI, NEPALI, URDU, SINHALA & AFRIKAANS

Editor : S. SAM SELVA RAJ | 16 Languages | Associate Editor : Dorathy S. Thomas

VOL. XXV | YEAR OF OUR LORD JESUS CHRIST, 2020 SEPTEMBER | No. 11


पवित्र बाइबल!

**इन वचनों को याद करें**
**परमेश्वर की स्तुति हो**
**भजन ४:१-८**

१ हे मेरे धर्ममय परमेष्वर, जब मैं पुकारूं
तब तु मुझे उत्तर दे; जब मैं सकेती में
पड़ा तब तू ने मुझे विस्तार दिया। मुझ पर
अनुग्रह कर और मेरी प्रार्थना सुन ले ।।
२ हे मनुष्यों के पुत्रो, कब तक मेरी महिमा
के बदले अनादर होता रहेगा? तुम कब
तक व्यर्थ बातों से प्रिति रखोगे और झूठी
युक्ति की खोज में रहोगे? (सेला)
३ यह जान रखो कि यहोवा ने भक्त को
अपनें लिए अलग कर रखा है; जब मैं
यहोवा को पुकारूंगा तब वह सुन लेगा।
४ कांपते रहो और पाप मत करो; अपने
अपने बिछौने पर मन ही मन सोचो और
चुपचाप रहो। (सेला)
५ धर्म के बलिदान चढ़ाओ, और यहोवा पर
भरोसा रखो।
६ बहुत से हैं जो कहते हैं, कि कौन हम को
कुछ भलाई दिखाएगा? हे यहोवा तू अपने
मुख का प्रकाश हम पर चमका!
७ तू ने मेरे मन में उससे कहीं अधिक
आनन्द भर दिया है, जो उनको अन्न और
दाखमधु की बढ़ती से होता था।
८ मैं शान्ति से लेट जाऊंगा और सो जाऊंगा;
क्योंकि, हे यहोवा, केवल तू ही मुझ को
एकान्त में निष्चिन्त रहने देता हैं।

# चुना हुआ और चुनौती

भाई एच. लामेक इब्नराज

"उस दिन तक जब वह उन प्रेरितों को जिन्हें उसने चुना था, पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया न गया..." प्रेरितों के काम १:२

१८ वीं सदी में फ्रान्स और इंग्लैंण्ड के मध्य एक बड़ा युद्ध हुआ। फ्रेन्च सेना ने फ्रेन्च राज्यक्रान्ति के महान नेता नेपोलियन बोनापार्ट के नेतृत्व में मुख्य भूमिका निभाई। अंग्रेज़ नौसेना के कमान्डर नेल्सन थे जिनकी अत्यंत प्रशंसा थी। ब्रिटिश सशस्त्र सेना के प्रधान सेनापति ने इंग्लिश नौसेना के प्रधान को आदेश दिया कि वे नेपोलियन बोनापार्ट की सेना के विरोध में लड़ें और किसी भी कीमत पर उसे पराजित करें। इस आदेश के साथ नेल्सन निकल पड़े। युद्ध में उन्हें अपना एक पैर और एक आंख भी गंवानी पड़ी, फिर भी लगातार लड़ते रहे, जिसकी नेपोलियन ने भी सराहना की। इतिहास में लिखा गया है कि नेल्सन को जो आदेश जारी किया गया था उसके प्रति उनमें जो समर्पण था उसे देखकर नेपोलियन भी अचम्भित रहा।

नेल्सन संसारिक अधिकारी द्वारा जारी किए आदेश के प्रति समर्पित था, हम में से प्रत्येक को राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के महान आदेश के प्रति कितना अधिक समर्पण रखना है? संसारिक अधिकारी के आदेश के प्रति आज्ञाकारी होने के परिणामस्वरूप, नेल्सन को इतिहास में एक विशेष स्थान प्राप्त हुआ। यदि हम हमारे प्रभु की आज्ञा का पालन करते रहे, तो वह हमें इतिहास में कितना आदर देगा? बाइबल विश्वासयोग्य सेवक को प्रतिफल का वचन देती है: "यीशु वहां से निकलकर सूर और सैदा के देशों की ओर चला गया" मत्ती २५:२१। हाल ही में, हमने ईस्टर मनाया। अतः हमारे लिए कुछ निश्चित आज्ञाओं पर मनन करना उत्तम होगा जो पुनरुत्थित प्रभु ने अपने चेलों को दी। यह आज्ञाएं मात्र चेलों को नहीं दी गईं थीं, परंतु मसीह के सभी लोगों को दी गई थी।

यदि संसार में तीन अरब मसीही हैं, तो उनमें से प्रत्येक के लिए आज्ञाएं दी गई हैं, उसी तरह भारत के (३ करोड़) मसीहियों को भी। यीशु के महान आदेश को मानते हुए प्रतिदिन अपने साथ के ३० नागरिकों को सुसमाचार सुनाएं, तब पूरा देश यीशु मसीह को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में जानेगा। प्रभु अब हमारी यह जानने में सहायता करे कि जब यीशु ने महान आदेश दिया, तब वह क्या अभिप्राय रखता था: "इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।" मत्ती २८:१९।




...क्रमशः पृष्ठ ३...

*Touching Lives By Teaching... Since 1969*

# बुलावे की प्रतिध्वनि

(ENGLISH, TAMIL, MALAYALAM, TELUGU, HINDI, MARATHI, KANNADA, BENGALI, GUJARATI, NEPALI, ODIYA, ASSAMESE, PUNJABI, URDU, SINHALA & AFRIKAANS MONTHLY MAGAZINE)

**"...मत डर, क्योंकि मैंने तुझे छुड़ा लिया है; मैंने तुझे नाम लेकर बुलाया है; तू मेरा ही है"** (यशायाह ४३:१)।

मसीह यीशु में प्रिय मित्र,

हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता के यीशु मसीह के मधुर नाम में हम आपका अभिवादन करते हैं।

पिछले ५० वर्षों के दौरान हमारे प्रभु यीशु मसीह ने सेवकाई में किस अद्भुत रीति से हमारी अगुवाई की इस विषय में सोचकर हमारे हृदय आनंद से उमड़ता है। **एको ऑफ हिज़ कॉल** के कार्यकारी दल के रूप में हम अपने सारे सहभागियों को इस साधारण सेवकाई के द्वारा परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए उनकी अखण्डित प्रार्थनाओं और सहायता के लिए प्रणाम करते हैं।

प्रभु परमेश्वर ने ६ से ११ अगस्त २०१६ तक हमारे मुख्य गिरजाघर में आयोजित साधारण सुवर्ण महोत्सव सभा को आशीषित किया। हम अपने सभी मित्रों का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने अपनी विशेष प्रार्थनाओं, अभिवादनों, भेटों आदि के द्वारा हमें प्रोत्साहित किया था। हम सारी महिमा और आदर प्रभु यीशु मसीह को देते हैं।

इस अंक में, हम हमारे **सेंट पॉल मैट्रिक्यूलेशन स्कूल** नामक ग्रामीण हायस्कूल के विषय में कुछ समाचार देना चाहेंगे। यह स्कूल चैनई नगर के एक उपक्षेत्र में कार्यरत् है और उसमें आर्थिक रीति से कमज़ोर करीब ५०० बच्चे अध्ययनरत हैं। सरकारी परीक्षा में बैठे सभी विद्यार्थी पिछले कई वर्षों से अच्छे अंकों से सफलता हासिल कर रहे हैं।

इस स्कूल का आरम्भ करीब २२ वर्षों पहले हुआ, अतः इमारत की दीवारों की मरम्मत करना और उसे रंग देना और फर्श में नए टाईल्स आदि लगाना होगा। यहां वातावरण बहुत गर्म होने के कारण, हमें पंखों के जैसी सुविधाओं का भी प्रबंध करना है। उसी तरह हम और कई अनुभवी शिक्षकों की नियुक्ति करने की प्रक्रिया में हैं। उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षा देने के हमारे लक्ष्य को पूरा करने हेतु, हमें पर्याप्त आर्थिक सहायता की आवश्यकता है। अतः हम आपके जैसे और सभी प्रियजनों से प्रार्थनाओं और सहायता के लिए विनम्र निवेदन करते हैं।

परमेश्वर हमारे नहेम्याह बाइबल कॉलेजेस को आशीष दे रहा है। इस समय हमारे पास ५० विद्यार्थी हैं। हमने १७ अगस्त को **"मनुष्य के जीवन में परमेश्वर की बुलाहट"** इस विषय पर विद्यार्थियों के लिए एक सेमिनार का और हमारे बाइबल कॉलेजेस के सभी विद्यार्थियों के लिए और हमारी कलीसिया के अगुवों के लिए २४ अगस्त २०१६ को एक सम्मेलन का आयोजन किया था।

हमारी कलीसियाओं में उत्तम फल आ रहे हैं। हमने ३ और ४ अगस्त को हमारे मुख्य गिरजाघर में दो दिनों की विशेष सभा का आयोजन किया था, परमेश्वर ने इसमें भाग लेने वालों को आशीष प्रदान की। हमारा सुसमाचार छापखाना प्रति घण्टा करीब १० हजार प्रतियां छापता है, और उसके द्वारा हम विभिन्न भाषाओं में सुसमाचार के हज़ारों पर्चे प्रकाशित करते हैं, और विनामूल्य वितरण के लिए हमारे मिशन केंद्रों में भेजते हैं।

यह सम्पादकीय पढ़ने के लिए धन्यवाद। हमें विश्वास है कि परमेश्वर आपको प्रेरणा देगा कि आप सभी सम्भव तरीकों से हमारे साथ हाथ मिलाएं। हम प्रभु में आप सभों को बहुत प्रेम करते हैं और आपके लिए प्रार्थना करते हैं। कृपया हमारे लिए प्रार्थना करें।

**CHIEF EDITORS**
Pastor S. Sam Selva Raj
Angeline Selvakumari Henry, M.A., M.Ed.
**MANAGING EDITOR**
Pastor Alex Samson Sam, B.Th., M.Div.
**ADMINISTRATION**
Bro. N. Prakasam, M.A., General Manager
**EDITORIAL BOARD**
Sis. Jesy Veena Sam
Bro. M. Paulraj, M.A., B.Ed.
Sis. Serena Bevin, M.A., M. Phil., B.Ed.
**ADVISORY BOARD**
Adv. Jose Abraham
Adv. N. Balaji, B.Com., B.L.
Dr. S. Rabinder Boaz, M.S.
Er. C.G.S. Baburao, B.Tech., M.Tech. (DM)
Aud. K. Puratchivendan, M.Com., B.L.
Bro. Rajeswaran Samuel, B.Com.

**PUBLISHER & PRINTER**
Pastor S. SAM SELVA RAJ
**Echo of His Call Printers**
10, Mohammed Abdullah 2nd Street,
Chepauk, Chennai- 600 005, India.
**Phone :** (+91-44) 2852 8282
2852 9293, 2854 7766
**Email :** sam@echoofhiscall.org
biblecor@yahoo.co.in
**Websites :**
www.echoofhiscall.org
www.echoofhiscall.com

**परमेश्वर आपको बहुतायत से आशीष दे।**

**मसीह यीशु में आपका सेवक,**
**एस. सॅम सिल्वा राज**

*...क्रमशः पृष्ठ १...*

(१) आज्ञा क्या है?
  (अ) अर्थ (ब) विशेषता (क) कार्यक्षेत्र
(२) आज्ञा क्यों?
  (अ) पुराने नियम का दृष्टिकोण,
  (ब) नए नियम का दृष्टिकोण
  (क) समकालीन दृष्टिकोण
(३) समापन

## १. आज्ञा क्या है?

**(अ) अर्थः** हम में से सभी अच्छी तरह से जानते हैं कि आदेश सामान्य तौर पर वरिष्ठ अधिकारी द्वारा अधीनस्थ अधिकारी को दी गई आज्ञा होती है। हम यह भी जानते हैं कि उसका उपयोग सामान्यतया सेना की भाषा में किया जाता है। फिर भी आदेश के विषय में दूसरी आम समझ यह है कि उसकी ओर अनदेखा नहीं किया जा सकता, परंतु उसे अमल में लाना आवश्यक होता है।

नए नियम में यीशु चेलों को आज्ञा देता है (ग्रीक भाषा में "Enteilamenos")। उसका वास्तव में अर्थ है अभिदिशा। इसलिए परमेश्वर की प्रत्येक संतान को निःसंदेह रूप से एक सत्य समझना है।

उसे इस विश्वास में आनंदित होना है कि यीशु ने उसे आज्ञाएं या आदेश दिए हैं। उसने अभिदिशाएं भी दी हैं।

**ब) आज्ञा की विशेषता :**

**१) दायित्व का कर्तव्य :** आज्ञा सामान्य तौर पर वरीष्ठ अधिकारी अधीनस्थ अधिकारी को दी जाती है। आज्ञा या आदेश वार्तालाप, विनंती और निवेदन से भिन्न होता है। यह दायित्व का कर्तव्य होता है। आज्ञा बिना अनुपालन के पूरी नहीं होती। उसे पूरा करना ही है।

**२) समयोन्मुख :** आज्ञा विशिष्ट समय के लिए होती है। यदि दिया गया काम समय पर पूरा नहीं होता, तो उसका मूल्य खो जाएगा। उदाहरण के लिए, कोई फौजी आदेश यदि नियुक्त समय पर पूरा नहीं किया जाता है, तो शत्रु आकर आक्रमण करेगा और विरोधी को खत्म कर देगा। इसलिए आदेश का पालन निश्चित समय में किया जाना चाहिए।

**३) कार्योन्मुख :** समय और लोगों को शामिल करने के अलावा उसे विशिष्ट काम भी पूरा करना होता है। प्रत्येक मसीही जीवन का उद्देश्य मात्र अस्तित्व नहीं है। परंतु सुसमाचार प्रचार के कार्य को पूरा करने हेतु अपने आपको सक्रिय बनाना है। यीशु मसीह आग्रहपूर्वक जिस आज्ञा की ओर संकेत करता है वह है सुसमाचार प्रचार का और विश्वासियों को बपतिस्मा देने का कार्य।

**क) आदेश का कार्यक्षेत्र :**

आदेश या आज्ञाएं अक्सर एक सीमा तक ही उचित होती हैं। रक्षा प्राणालियों में कई आज्ञाएं होती है। एक विशिष्ट सेनापति निश्चित क्षेत्र में कार्य करने हेतु केवल एक सैनिक के दल को आदेश दे सकता है।

परंतु, जो आदेश हमारे प्रभु यीशु मसीह ने हमें दिया है उसकी सामर्थ समस्त पृथ्वी पर है। उसकी सामर्थ दुष्ट पर, ऊंचे स्थानों पर और नीचे नर्क में भी है। यीशु ने कहा, "सारे जगत में जाओ।" यीशु की आज्ञा प्रदेश, भाषा, संस्कृति, जाति, रंग, सम्प्रदाय, धर्म आदि से परे है। और यह आदेश सबको दिया गया है। कोई भी मसीही इस आज्ञा से बचा नहीं है। मसीह के सभी लोगों को इस महान आदेश में अपने आपको शामिल करना है।

भारत पूरी पकी और तैयार फसल के लिए उत्तम भूमि है। यह सबसे बड़ा देश है जिसमें शिष्य बनाने के लिए लोगों की बड़ी भीड़ है। संसार में जिनको सुसमाचार नहीं सुनाया गया है उनका ८० प्रतिशत यहां है। इसलिए परमेश्वर की प्रत्येक संतान जिसे महान आदेश की बुलाहट मिली है उसे सुसमाचार प्रचार का कार्य करना है।

## पुराने नियम में आज्ञा

पुराने नियम में परमेश्वर के दास मूसा के द्वारा इस्राएलियों को आज्ञा दी गई थी। यह दस आज्ञाओं के रूप में जानी जाती है। यह भी सकारात्मक नियम और नकारात्मक नियम के रूप में जानी जाती है। इसके पालन से और अज्ञान से या तो आशीष मिलती है या शाप। निर्गमन की पुस्तक के २०वें अध्याय में ३रे वचन से लेकर १७ तक दस आज्ञाएं दी गई हैं। परमेश्वर यह कहकर दोहराता है कि "तुम मेरे साथ किसी को सम्मिलित न करना, अर्थात् अपने लिये चान्दी वा सोने से देवताओं को न गढ़ लेना। मेरे लिये एक मिट्टी की वेदी बनाना, और अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों के होमबलि और मेलबलि को उस पर चढ़ाना; जहां जहां मैं अपना नाम का स्मरण कराऊं वहां वहां मैं आकर तुम्हें आशीष दूंगा" निर्गमन २०:२३, २४।

इस प्रकार पुरानी नियम की आज्ञा जिसे व्यवस्था कहा जाता है, इब्रानी में 'तोरह' कहा जाता है, एकेश्वरवाद की कल्पना को स्थापित करना है। इसका अर्थ एकमात्र परमेश्वर समस्त विश्व का और मानवजाति का सृजनहार। नैतिकता और नैतिक विवेक की असफलता के कारण मानवजाति को आज्ञा दी गई थी। विवेक को और उचित सहभागिता को फिर स्थापित करने हेतु, परमेश्वर ने व्यवस्था दी। आज्ञा का पालन किया जाना चाहिए। जब उसका पालन किया जाता है, तब आशीषें प्राप्त होती हैं, परंतु जब उसका उल्लंघन होता है, तो मुश्किलें उत्पन्न होती हैं। इसलिए हमें नए दृष्टिकोण से इन आज्ञाओं की ओर देखना है। आज्ञा का विस्तार उसका किस तरह उपयोग या गलत उपयोग किया जाता है इस पर निर्भर है।

परंतु, पुराने नियम की व्यवस्था के विषय में पौलुस कहता है, "क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिए कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है" रोमियों ३:२०

## नए नियम में आज्ञा

नए नियम की आज्ञा पुराने नियम की आज्ञा से पूर्णतया भिन्न है। वह पुराने नियम की आज्ञाओं का खण्डन नहीं करती, परंतु उनकी पूरक है। यीशु ने कहा, मैं व्यवस्था को नष्ट करने नहीं, परंतु उसे पूरा करने के लिए आया हूं। इसका अर्थ यह है कि व्यवस्था का उद्देश्य सम्भवतः पूरा नहीं हुआ था। यीशु आगमन ने व्यवस्था के स्थान पर अनुग्रह ले आया। नए नियम का समय अनुग्रह का समय है और उसमें जीवन के भिन्न मानक की अपेक्षा की गई है। पुराने नियम में मजबूरी और डर के कारण आज्ञाओं का पालन किया जाता था। परंतु नए नियम में, वह विवेकाधीन है और प्रेम पर आधारित होना चाहिए।

आज मसीहियों को व्याकुल करने वाली बातें उनकी समस्याएं हैं। जब उन्हें परीक्षाओं और कसौटियों का सामना करना पड़ता है, तो वे तुरंत अपनी इच्छाशक्ति खो बैठते हैं। वे तुरंत परमेश्वर की प्रतिज्ञा को भूलने की प्रवृत्ति रखते हैं। बाइबल कहती है : "क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; वरन् वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला" इब्रानियों ४:१५। राजा दाऊद विपत्ति के समय कहता है, "यहोवा परमेश्वर मेरी ज्योति और मेरी उद्धार है; मैं किस से डरुं? यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है, मैं किस का भय खाऊं?" भजन २७:१। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को भूल जाने का एकमात्र उपाय है याद करने की क्षमता को बढ़ाना। मनुष्य स्वभाव के अनुसार उन बातों को और घटनाओं को भूल जाते हैं जिनसे वे प्रेम करते हैं। इसलिए हमें यह समझने की ज़रूरत है कि, यदि हमें परमेश्वर को और उसके अनमोल वचनों को याद रखने की ज़रूरत है, तो ऐसा करने का एकमात्र तरीका है उसे प्रेम करना।

आज्ञा के सम्बंध में पूछ गए प्रश्न के उत्तर के रूप में यीशु ने कहा : "सब आज्ञाओं में से यह प्रमुख है, 'हे इस्राएल, सुन! प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है। और तू प्रभु अपने परमेष्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण से और अपनी सारी बुद्धि से और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना'" मरकुस १२:२९, ३०। इस संदेश के प्रत्येक पाठक को ध्यान देना है कि यीशु किस तरह सिद्धांत और मूल्य के विषय में पहली आज्ञा के सम्बंध में किस प्रकार बोलता है। पहला भाग कहता है कि आपको प्रभु परमेश्वर से प्रेम करना है, यह सिद्धांत होना चाहिए, परंतु मूल्य है प्रेम। वह कहता है कि सिद्धांत का मूल्य प्रभु से सारी अ) शक्ति ब) मन क) प्राण और ड) बुद्धि से प्रेम करना है।

भौतिक और आत्मिक दोनों प्रकार की आशीषें आज्ञाओं का पालन करने के बाद सहज रूप से प्राप्त होती है। संसारिक शर्तों का उल्लेख करते हुए यीशु ने कहा, "इसलिए पहले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएगी" मत्ती ६:३३।

## मसीह की आज्ञा का समकालीन दृष्टिकोणः

यीशु ने कहा, "जाओ और जाकर सुसमाचार सुनाओ।" यह ऐसी आज्ञा है जो सार्वत्रिक तौर पर सभी मसीहियों को लागू है। इसलिए संत पौलुस ने कहा, "और यदि मैं सुसमाचार सुनाऊं, तो मेरा कुछ घमण्ड नहीं; क्योंकि यह तो मेरे लिए अवश्य है; और यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊं, तो मुझ पर हाय!" १ कुरिन्थियों ९:१६।

आज के संसार में सुसमाचार सुनाना पिछले दिनों से अधिक प्रासंगिक है। जहां कहीं हम जाते हैं, हम हताश, निराश, धोखा खाए हुए, घायल, पाप से बंधे हुए, शांतिरहित, दर्शन और जीवन की अभिदिशा का अभाव रखने वाले लोग देखते हैं। संसार सुसमाचार की खोज में है।

मुझे एक घटना का स्मरण हो आता है जो मैंने अपने लड़कपन के दिनों में देखी। एक दिन जब मैं स्कूल से लौट रहा था, मैंने एक कौवे को अनाज पर बैठकर कुछ खाते हुए देखा। परंतु कुछ समय के बाद, दूसरे कौवों को उसके भोजन में सहभागी होने के लिए वह जोर जोर से चिल्लाने लगा। मैंने एक सच्चाई

...क्रमशः पृष्ठ ६...

## समाचार

### मसीही स्कूल आग से भस्म

**मणिपुरः** अनुशासनहीनता के लिए स्कूल अधिकारियों द्वारा छः विद्यार्थियों को निलम्बित करने के कुछ दिनों बाद, २५ अप्रैल को मणिपुर के काकचिंग जिले के एक मसीही स्कूल को आग लगा दी गई। सेंट जोजफ हायर सेकेंड्री स्कूल की ३५ लाख (५० हजार डॉलर्स) की सम्पत्ति जलकर राख हो गई। प्रधानाचार्य ने आरोप लगाया है कि निलम्बित किए गए विद्यार्थियों ने स्थानीय विद्यार्थी मंडल के सहयोग से इस अपराध को अंजाम दिया होगा। स्कूल में करीब १४ सौ विद्यार्थी हैं - एएनआय/एचटी

*- फोररनर (जून २०१९)*

**The details of our Bank Accounts are given below. Please inform us the details of your remittances.**

| Bank | Branch | Name | IFSC Code No. | Account Number |
|---|---|---|---|---|
| 1. STATE BANK OF INDIA<br>2. ICICI BANK | Triplicane, Chennai -5<br>Anna Salai, Chennai -2 | S. Sam Selva Raj<br>Echo of His Call | SBIN 0000249<br>ICIC 0006038 | 102329 34679<br>6038 05022319 |

# महान आदेश के भागी

❋ भार उठना (गलातियों ६:२), ❋ सहायता करना (रोमियों १२:१३) और ❋ चमकाना (२ तीमुथियुस १:६)

## स्तुति और प्रार्थना निवेदन
## १६ अगस्त २०१६ से १८ सितबर २०१६ तक

(कृपया इस पृष्ठ को फाड़िये, घड़ी कीजिए और उसे अपनी बाइबल में रखकर निरंतर प्रार्थना कीजिए।)

## स्तुति विषय

सितंबर १६ **एको ऑफ हिज़ कॉल सेवकाइयों** के सदस्यों की पूरी टीम के लिए परमेश्वर की स्तुति करें। ६ से ११ अगस्त को होने वाली **एको ऑफ हिज़ कॉल सेवकाइयों** के स्वर्ण महोत्सव प्रार्थना सभा के लिए परमेश्वर की स्तुति करें।

अगस्त २० : **एको ऑफ हिज़ कॉल सेवकाइयों** के प्रायोजकों के लिए परमेश्वर की स्तुति करें।

अगस्त २१ : हमारे मुख्य गिरजाघर में प्रति रविवार सुबह ५.३० से शाम ८ बजे तक पांच भाषाओं में होने वाली सात आराधना सभाओं के लिए परमेश्वर की स्तुति करें।

सितंबर २२ : परमेश्वर हमारे वेलाचेरी कलीसिया में प्रति रविवार दो भाषाओं में होने वाली आराधना सभाओं के लिए परमेश्वर की स्तुति करें।

सितंबर २३ : परमेश्वर ने १६ भाषाओं में प्रकाशित हमारे सुसमाचार साहित्य को आशिषित किया जो हमारे छापखाने में छपकर मिशन क्षेत्रों में भेजे जा रहे हैं। परमेश्वर की स्तुति करें।

सितंबर २४ : परमेश्वर की स्तुति हो कि परमेश्वर ने मुख्य गिरजाघर में और उसके आसपास के बच्चों की सेवकाई को आशीषित किया है।

सितंबर २५ : परमेश्वर की स्तुति हो कि परमेश्वर ने अनपहुंचे स्थानों में सुसमाचार के साथ प्रवेश करने हेतु बड़े अनुग्रह से हमारी सहायता की।

सितंबर २६ : मुख्य गिरजाघर के प्राचीनों की सभा के लिए परमेश्वर की स्तुति करें।

सितंबर २७ : परमेश्वर की स्तुति हो कि परमेश्वर हमारे मुख्य गिरजाघर में पुरुषों की सेवकाई और स्त्रियों की सेवकाई को आशीषित कर रहा है।

सितंबर २८ : परमेश्वर की स्तुति हो कि उसने हमारे **नहेम्याह बाइबल कॉलेजेस** के लिए अनुभवी व्याख्याता देकर हमें आशीषित किया।

सितंबर २६ : परमेश्वर की स्तुति हो कि उसने हमारे सारे क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं को और उनके समर्पित कार्य की रक्षा की।

सितंबर ३० : हम अपने प्रार्थना सहभागियों, विश्वास सहभागियों, जीवन सहभागियों और महान आदेश सहभागियों और उनके परिवार के सदस्यों के लिए परमेश्वर की स्तुति करें।

अक्टूबर १ : परमेश्वर की स्तुति हो परमेश्वर पिछले महीने में **एको ऑफ हिज़ कॉल सेवकाइयों** की सारी गतिविधियों को आशीषित किया।

अक्टूबर २ : परमेश्वर हमारे वरिष्ठ पासबान एस. सॅम सेल्वाराज और उनके परिवार की सब बुरी शक्तियों से रक्षा कर रहा है।

अक्टूबर ३ : परमेश्वर की स्तुति करें कि उसने हमारी शाखा कलीसियाओं के पासबानों और उनके समर्पित परिश्रम को आशीषित किया।

## प्रार्थना विषय

अक्टूबर ४ : हमारे **नहेम्याह बाइबल कॉलेज** के विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रार्थना करें।

अक्टूबर ५ : प्रार्थना करें कि परमेश्वर इस माह **एको ऑफ हिज़ कॉल सेवकाइयों** की सारी आर्थिक ज़रूरतों को पूरा करे।

अक्टूबर ६ : **एको ऑफ हिज़ कॉल** सेवकाइयों के विस्तार के लिए प्रार्थना करें।

अक्टूबर ७ : हमारे सुसमाचार छापखाने के कर्मचारी सदस्यों के कल्याण के लिए प्रार्थना करें।

अक्टूबर ८ : हमारे **नहेम्याह मौलिक** बाइबल पत्राचार पाठ्यक्रम और ईश्वरविज्ञान पत्राचार पाठ्यक्रमों के लिए प्रार्थना करें।

अक्टूबर ६ : हमारे सभी मित्रों और हितैषियों के कल्याण के लिए प्रार्थना करें जो **एको ऑफ हिज़ कॉल सेवकाइयों** के लिए सम्पूर्ण हृदय से प्रार्थना और सहायता करते हैं।

अक्टूबर १० : भारत के अनपहुंच स्थानों में सुसमाचार पहुंचाने के हमारे वरिष्ठ पासबान एस. सॅम सेल्वाराज के दर्शन के लिए प्रार्थना करें।

अक्टूबर ११ : हमारे मुख्य गिरजाघर और शाखा कलीसियाओं के विश्वासियों के लिए प्रार्थना करें।

अक्टूबर १२ : संसार के सारे प्रधानमंत्रियों और राष्ट्राध्यक्षों के लिए प्रार्थना करें।

अक्टूबर १३ : कलीसियाओं के मध्य एकता के लिए प्रार्थना करें।

अक्टूबर १४ : संसार के छोटे बच्चों की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें।

अक्टूबर १५ : उत्तर भारत के मिशनरियों के लिए प्रार्थना करें।

अक्टूबर १६ : संसार के सभी राजनीतिज्ञों के लिए प्रार्थना करें।

अक्टूबर १७ : भारत के पंजाब राज्य के लोगों के लिए प्रार्थना करें।

अक्टूबर १८ : प्रार्थना करें कि परमेश्वर **एको ऑफ हिज़ कॉल** के लिए और समर्पित कार्यकर्ता तैयार करे।

*...पृष्ठ ४ से आगे...*

जान ली, वह अपने साथी पक्षियों से कितना प्रेम करता है। हमें प्रेम को अधोरेखित करना है।

यीशु ने कहा कि प्रेम प्राथमिक आज्ञा है; दूसरा वह कहता है "और दूसरी यह है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना; इससे बड़ी और कोई आज्ञा नहीं" मरकुस १२:३१। यीशु शायद यह कहना चाहता था कि यदि हम परमेश्वर से पूर्ण रूप से प्रेम करते हैं तो पड़ोसियों के प्रति हमारे प्रेम में यह अपने आप दिखाई देगा। पड़ोसियों से प्रेम किए बिना, हम परमेश्वर से यह नहीं कह सकते कि हम उससे प्रेम करते हैं। यीशु पाखण्डियों को यह पूछते हुए सावधान करता है, "आप उस परमेश्वर को कैसे प्रेम कर सकते हैं जिसे आपने नहीं देखा, जबकि आप अपने भाई से प्रेम नहीं करते, जिसे आप देखते हैं?" परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदय और मन पर राज्य करने पाए। कौवे के समान, हम प्रेम के द्वारा लोगों को बुलाएं कि वे आकर प्रभु के ज्ञान की सेवा करें।

## समापन :

इस संसार के उद्धारकर्ता यीशु मसीह ने हमें धन्य सुसमाचार कार्य के लिए आज्ञा दी है। जब हम चार अरब से अधिक लोगों को स्मरण करते हैं जिन्हें यीशु की ज़रूरत है, तो हमारे हृदय पसीजने पाए। केवल भारत में ही ६४ करोड़ लोग हैं जो अब तक प्रभु को नहीं जानते। जाओ और जाकर सुसमाचार सुनाओ। क्या आप सुसमाचार नहीं सुना सकते? स्मरण करें कि प्रभु ने आपके साथ, आपके मित्र के साथ, बहन, भाई, माता-पिता, सहयोगियों के साथ क्या किया। उसने आपको कितने अवसर दिए हैं? आपने कितनी बार परमेश्वर के आत्मा की आवाज को अनसुना किया जो आपको प्रेरित कर रही थी कि आप किसी को यीशु के विषय में बताएं?

यह आपका समय है। यदि आप उसे खो देते हैं, तो आप सार्वकालिक सुख के समय को खो देंगे। सुविख्यात वैज्ञानिक ब्लेज़ पास्कल से एक समय एक सुसमाचार प्रचारक ने भेंट की। जब पास्कल संसारिक दुनिया में अपनी सफलता के सर्वोच्च शिखर पर थे, तब उन्होंने प्रभु को ग्रहण किया। उस समय से उन्होंने अपने साथी वैज्ञानिकों, मित्रों और सहयोगियों को सुसमाचार सुनाने का अटूट आवेश दिखाया। उनकी आयु ज्यादा नहीं थी; अपनी जवानी के दिनों में ही वे प्रभु में सो गए। परंतु वे कह सके, "मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं, मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रखवाली की है" २ तीमुथियुस ४:७।

हम यह मानकर नहीं चलते कि हमें दीर्घायु प्राप्त होगी, परंतु हम यह आशा करते हैं कि इस जीवन में यदि हम प्रभु और परमेश्वर के लिए जीएं, तो हम हमेशा के लिए अमरता का जीवन जीएंगे। हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने का प्रयास करें। बाइबल कहती है, "तेरे जो दास अपने संपूर्ण मन से अपने को तेरे सम्मुख जानकर चलते हैं, उनके लिए तू अपनी वाचा पूरी करता, और करूणा करता रहता है" १ राजा ८:२३। यहां चलने का अर्थ उसकी सारी आज्ञाओं और नियमों को मानना और उनका पालन करना है। प्रार्थनापूर्वक सुसमाचार का कार्य करें।


# NEHEMIAH BIBLE COLLEGES

**ECHO OF HIS CALL MINISTRIES** (ESTD.: 1969)

**Affiliated to Hindustan Bible Institute & College (HBI), Chennai**

**&**

**Recognised by the International Christian Leaders & Senior Pastors for the 50 Years!**

**RESIDENTIAL COLLEGE, Velachery**
**(Medium: English & Hindi)**
Course : Diploma in Theology,
Qualification : 10th Standard
Period : One year (with field and administrative trainings)

Golden Opportunity!

Don't miss!!

God is Calling you!!!

**EVENING COLLEGE, Chepauk & Santhoshapuram**
**(Medium : Tamil)**
Course : Diploma in Theology
*Monday, Tuesday & Thursday 6.30 PM to 8.30 PM*
(Evening Classes - Chepauk)
Qualification : 10th Standard
Period : One year (with special Seminars on holidays)

**Pastor S. Sam Selva Raj, Founder-President**

**For more details & application forms please contact :**

NEHEMIAH BIBLE COLLEGES
10, Mohammed Abdullah 2nd Street, Bells Road, Opp. Cricket Stadium, Chepauk, Chennai - 600 005, India.
**Phone : (+91-44) 2852 8282, 2852 9293, 2854 7766, Cell No : (+91) 95661 31858, 97908 05460**
**E.mail : sam@echoofhiscall.org / biblecor@yahoo.co.in Websites : www.echoofhiscall.org / www.echoofhiscall.com**

# मसीही जीवन जीने हेतु कुछ महत्वपूर्ण निर्देश

जब व्यक्ति किसी कारोबार में प्रवेश करता है और उसमें यदि सफलता पाना चाहता है, तो वह उस कारोबार के बारे में जो कुछ सीख सकता है सीख लेता है। यीशु ने इसका ध्यान रखते हुए कहा, "इस संसार के लोग अपने समय के लोगों के साथ रीति व्यवहारों में ज्योति के लोगों से अधिक चतुर हैं" (लूका १६:८)। उसका अभिप्राय यह था कि इस संसार की बातों में, इस संसार के लोग परमेश्वर की संतानों से अधिक सामान्य बुद्धि और विवेक रखते हैं। अर्थात, आने वाले संसार से सम्बंधित बातों में, अत्यंत निर्धन मसीही भी निश्चित रूप से इस संसार के सबसे चालाक व्यक्ति से अधिक बुद्धिमान है।

यीशु ने बताया कि यदि कोई व्यक्ति मीनार बनाना चाहता है, तो उसे पहले अनुमान लगाना चाहिए कि उसकी कीमत क्या होगी यह देखने के लिए कि क्या उसके पास उसे पूरा करने के लिए पर्याप्त धन है। मसीहियों को उनके सारे मामलों में उत्तम व्यवसायिक बुद्धि का उपयोग करना चाहिए।

"तुममें से कौन है कि गढ़ बनाना चाहता हो, और पहले बैठकर खर्च न जोड़े, कि पूरा करने की सामर्थ मुझ में है या नहीं? कहीं ऐसा न हो, कि जब नेव डालकर तैयार न कर सके, तो सब देखनेवाले यह कहकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगें, कि यह मनुष्य बनाने तो लगा, परंतु पूरा न कर सका?" (लूका १४:२८-३०)।

## नियमित प्रार्थना जीवन आरम्भ करें

यदि व्यक्ति सफल मसीही बनना चाहता है, तो उसे उन साधनों का उपयोग करना चाहिए जो परमेश्वर ने उस उद्देश्य से दिए हैं। उदाहरण के तौर पर, पहली बात उसे जो करना चाहिए, वह है नियमित प्रार्थना जीवन का आरम्भ करें। इस पर बहुत अधिक जोर नहीं दिया जा सकता। यह अत्यंत अद्भुत बात है कि नियमित रूप से प्रार्थना करने वाला पुरुष या स्त्री अपने जीवनकाल में किन बातों को हासिल कर सकता है। प्रार्थना परमेश्वर की ओर से कई बातों को प्राप्त करने का साधन है। यहां पर उदाहरण के लिए एक प्रतिज्ञा है जो यीशु ने दी :

"मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिए खोला जाएगा" (मत्ती ७:७-८)।

मरकुस ११:२२-२४ में यीशु ने विश्वास की जो सामर्थ घोषित की उस पर गौर करें,

"यीशु ने उसको उत्तर दिया, परमेश्वर पर विश्वास रखो। मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो कोई इस पहाड़ से कहे कि तू उखड़ जा, और समुद्र में जा गिर, और अपने मन में सन्देह न करे, वरन् प्रतीति करे कि जो कहता हूं वह हो जाएगा, तो उसके लिए वही होगा। इसलिए मैं तुमसे कहता हूं कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो, तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिए हो जाएगा।"

शायद आपसे मेरी सबसे महत्वपूर्ण सलाह यह है कि आप प्रार्थना को प्रतिदिन की आदत बनाएं। प्रतिदिन आपको आपके जीवन की प्रत्येक महत्वपूर्ण बात प्रभु के सामने लाना है - आपके दैनिक कार्यकलाप, आपका पैसा, आपकी समस्याएं, आपका परिवार, आपका काम, आपकी आशाएं, आपका करियर। यदि आप प्रतिदिन ऐसा करने के विषय में विश्वासयोग्य रहे, तो आप पाएंगे कि आपका जीवन उस नमूने के अनुसार बनता जा रहा है जिसकी परमेश्वर ने आपके लिए योजना बनाई है। इस बात को स्मरण करें : परमेश्वर के पास प्रत्येक जीवन के लिए एक विशिष्ट मानचित्र है। वह उस जीवन के लिए सर्वोत्तम योजना है। ऐसा हो सकता है कि आपको सेवकाई के लिए, मिशनरी बनने के लिए, या कलीसिया में प्रशिक्षित कार्यकर्ता बनने के लिए बुलाया गया हो या आपको व्यावसायिक या गृहिणी बनने के लिए बुलाया गया हो। परमेश्वर की सिद्ध इच्छा आपके लिए है, परंतु प्रार्थना करने के द्वारा आपको उस इच्छा में प्रवेश करना चाहिए। दुख की बात यह है कि, कई मसीही स्पष्ट रूप से परमेश्वर के उत्तम बातों को खो बैठते हैं। कई बार यह वैवाहिक जीवन मे भी सच होता है। यदि व्यक्ति आग्रह के साथ प्रार्थना नहीं करता, तो वह गलत साथी के साथ विवाह कर बैठता है, और उसके परिणामस्वरूप, उसके सम्पूर्ण जीवन पर उसका प्रतिकुल असर पड़ता है। जीवनसाथी चुनने के विषय में दूसरे अनुमान के लिए बहुत कम स्थान है। नियमित प्रार्थना जीवन स्थापित करें जैसा उन्होंने प्रारम्भिक कलीसिया मे किया (प्रेरितों के काम ३:१)। इस प्रकार आप अपने आपको कई गलतियों से बचा सकते हैं।

उसी तरह, कोई भी मसीही जो सबसे महत्वपूर्ण काम कर सकता है, वह है दूसरों के लिए और उनकी समस्याओं और ज़रूरतों के लिए प्रार्थना करना। यह मध्यस्थी की सेवकाई है। मध्यस्थी की सेवकाई से अधिक बड़ी बुलाहट दूसरी कोई नहीं है। और यह बुलाहट सबके लिए खुली है। यह आपके लिए खुली है! यदि आप मध्यस्थी की प्रार्थना की सामर्थ सीखेंगे, तो इसका उत्तर यहेजकेल २२:३०-३१ मे है।

"और मैंने उनमें ऐसा मनुष्य ढूंढ़ना चाहा जो बाड़े को सुधारे और देश के निमित्त नाके में मेरे सामने ऐसा खड़ा हो कि मुझे उसको नाश न करना पड़े, परन्तु ऐसा कोई न मिला। इस कारण मैंने उस पर अपना रोष भड़काया और अपनी जलजलाहट की आग से उन्हें भस्म कर दिया है; मैंने उनकी चाल उन्हीं के सिर पर लौटा दी है, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।"

दूसरे शब्दों मे, परमेश्वर कहता है कि उसने लोगों के लिए प्रार्थना करने हेतु एक मनुष्य की खोज की कि वे परमेश्वर की ओर लौटें। परंतु उसे प्रार्थना करने वाला कोई न मिला। उसने उन्हें दण्ड दिया और उनकी दुष्टता के कारण उनके देश को नाश कर दिया।

## प्रतिदिन बाइबल पढ़ें

बाइबल को उचित रीति से समझने के लिए आपको इस विचार के साथ उसका अध्ययन करना है कि परमेश्वर अपने पवित्र वचन के द्वारा आपसे बात कर रहा है। अब क्योंकि आप पुस्तक के लेखक को जानते हैं - वह आपका स्वर्गीय पिता है - अतः आपको उसके पृष्ठों से बड़ा प्रोत्साहन और शिक्षा प्राप्त होगी।

यह सच है कि बाइबल की कुछ पुस्तकें हैं जो अन्य पुस्तकों से समझने मे अधिक कठिन हैं। बाइबल को दो भागों में बांटा गया है - पुराना नियम और नया नियम। पुराना नियम मसीह का पृथ्वी पर जन्म होने से पहले लिखा गया था। वह बताता है कि परमेश्वर ने युगों से मनुष्य के साथ कैसे व्यवहार किया, और कई स्थानों में यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र के जन्म और मृत्यु की भविष्यद्वाणी भी करता है, जो मानवजाति को छुड़ाने के लिए आने वाला था।

नया नियम यीशु मसीह के पृथ्वी पर रहने, मरने, और मृतकों में से जी उठने के बाद लिखा गया। नए नियम की पहली चार पुस्तकों (मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना) को सुसमाचार कहा गया है और मसीह और पृथ्वी पर उसके मिशन की कहानी बताते हैं। प्रत्येक मसीही को इन पुस्तकों के साथ आरम्भ करना है। अगली पुस्तक जिसे प्रेरितों के काम कहा जाता है, बताती है कि किस प्रकार मसीह के स्वर्गारोहण के बाद उसके शिष्यों ने या अनुयायियों ने उसके कार्य को आगे बढ़ाया और कलीसिया के आरम्भ को तैयार किया। प्रेरितों के काम की पुस्तक आज की मसीही कलीसिया के लिए नक्शा देती है। नए नियम की अधिकतर पुस्तकें प्रेरित पौलुस ने पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में विभिन्न नगरों और देशों की कलीसियाओं को लिखी - उसके निर्देश आज हमारे लिए भी उतने ही मूल्यवान हैं जितने कि वे प्रारम्भिक कलीसिया के मसीहियों के लिए थे।

नए नियम के प्रत्येक अध्याय को पढ़ते जाएं; एक भी अध्याय न छोड़ें। आपके मसीही जीवन के लिए नया नियम आपका मार्गदर्शक है।

नया नियम पढ़ने के बाद, आप पुराने नियम से आरम्भ कर सकते हैं। उसमें आप उन स्त्री और पुरुषों के विषय में पढ़ेंगे जिन्होंने परमेश्वर की सेवा की और अन्य लोग जिन्होंने नहीं की, और परमेश्वर ने उनके साथ किस प्रकार व्यवहार किया। परमेश्वर से बिनती करें कि वह आपके लिए पवित्र शास्त्र को प्रकाशित करे ताकि आप उन महत्वपूर्ण पाठों को सीखेंगे जो पुराना नियम सिखाता है। परंतु, नया नियम विशेषकर हमारे लिए लिखा गया था - कलीसियाई युग के सच्चे विश्वासियों के लिए - ताकि आप वहां बड़ी सहायता प्राप्त करें। मसीही विश्वासी के लिए प्रतिदिन कम से कम तीन अध्याय पढ़ना अच्छा है। अपने पासबान से पूछें कि पवित्र शास्त्र को समझाने के लिए अध्ययन समूह तैयार करे। यह सबके लिए समृद्ध अनुभव होगा। परंतु, यदि आपको परमेश्वर की इच्छा जानने में कठिनाई है, तो पवित्र आत्मा से बिनती करें कि वह आपका मार्गदर्शन करे।

## परमेश्वर को देने में विश्वासयोग्य रहें

बाइबल याकूब के विषय में बताती है जिसमें कुछ अत्यंत अप्रिय गुण थे। उसकी नीचता बढ़ती गई, और अंत में परमेश्वर उसके जीवन में आया। एक दिन धोखा देने के कारण गम्भीर विपत्ति में पड़ने के कारण उसे घर से भागना पड़ा। परंतु उस रात परमेश्वर ने स्वर्ग का दर्शन दिया। उस दर्शन ने उसके जीवन को बदल दिया, और उसी स्थान में उसने परमेश्वर के सामने शपथ ली कि वह उन सारी वस्तुओं का दसवांश देने में विश्वासयोग्य रहेगा जो उसने उसकी सहायता से कमाई थी।

"और याकूब ने यह मन्नत मानी, कि यदि परमेश्वर मेरे संग रहकर इस यात्रा में मेरी रक्षा करे, और मुझे खाने के लिये रोटी, और पहनने के लिये कपड़ा दे, और मैं अपने पिता के घर में कुशल क्षेम से लौट आऊं; तो यहोवा मेरा परमेश्वर ठहरेगा। और यह पत्थर, जिसका मैंने खम्भा खड़ा किया है, परमेश्वर का भवन ठहरेगाः और जो कुछ तू मुझे दे उसका दशमांश मैं अवश्य ही तुझे दिया करूंगा" (उत्पत्ति २८:२०-२२)।

यह एक दुखद सत्य है कि कुछ तथाकथित मसीही इतने लोभी हैं कि वे अपना दसवांश नहीं देते। परमेश्वर उन्हें चोर और लुटेरे कहता है। उन्होंने मनुष्य को नहीं लूटा, परमेश्वर को लूटा है।

"क्या मनुष्य परमेश्वर को धोखा दे सकता है? देखो, तुम मुझ को धोखा देते हो, और तौभी पूछते हो कि हम ने किस बात में तुझे लूटा है? दशमांश और उठाने की भेंट में। तुम पर भारी शाप पड़ा है, क्योंकि तुम मुझे लूटते हो; वरन सारी जाति ऐसा करती है। सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे; और सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूं कि नहीं" (मलाकी ३:८-१०)।

दूसरी ओर, परमेश्वर ने उन लोगों पर विशेष आशीष उण्डेलने का वायदा किया है जो उसे देने के विषय में विश्वासयोग्य भण्डारी हैं। दसवांश देना जो कुछ हम कमाते हैं या वेतन अथवा वस्तुओं के रूप में प्राप्त करते हैं उसका दसवां भाग परमेश्वर को लौटाना है। जो कुछ हमारे पास है वह सब परमेश्वर की ओर से आता है। वह कहता है कि हम उसके कार्य के लिए कम से कम दसवां हिस्सा दें।

प्रभु के कार्य की सहायता पहले आनी चाहिए। जितनी बार आपको आपके काम से या बिक्री से पैसा या वस्तुएं मिलती हैं, परमेश्वर कहता है कि उसका दसवांश आप पहले उसे दें।

विश्व मिशन के प्रति मसीहियों की ज़िम्मेदारी को अनदेखा न करें। जो लोग मसीह को नहीं जानते उनके प्रति हम सभों का एक ऋण है। मसीह ने कहा, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो..." शायद परमेश्वर आपको सेवक या मिशनरी के रूप में बुलाएगा। यदि नहीं, तो आपके पास एक ज़िम्मेदारी है कि आप किसी और को वह संदेश पहुंचाना सम्भव हो इसलिए सहायता करें।

प्रभु आपको आशीष दे।

# खाई से महल तक

(पास्टर एस. सॅम सेल्वा राज के जीवन अनुभव)

*"जो पढ़े वह समझे"* मत्ती २४:१५

"परमेश्वर... उपाय करेगा।" (उत्पत्ति २२:८)

"परमेश्वर उपाय करेगा।" (उत्पत्ति २२:१४)

चेन्नई, मद्रास शहर में मुख्य गिरजाघर की स्थापना करने के प्रारम्भिक दिनों से, मुझे उन लोगों के साथ कई समस्याओं और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा जो परमेश्वर की सामर्थ और उसके सेवकों के बल को नहीं जानते थे। केवल मैं और मेरा परिवार ही उस इलाके में एकमात्र मसीही थे, अतः हम पर उस स्थान के लोगों द्वारा अत्याचार किया जाता था और सताया जाता था। हमें अन्य लोगों के समान हमारी इमारत के सामने अपनी गाड़ियों को रखने की अनुमति नहीं थी।

पास वाला घर बहुत पुराना था और उसमें अंदर बाहर कई प्रकार की क्षतियां थीं। पानी का पाईप और दीवार के अंदर के निकासी पाईप टूटे हुए थे और इस कारण घर की दीवार और छत को बहुत नुकसान हो रहा था।

एक बार उस घर के मालिक मेरे पास कुछ असामाजिक तत्वों को लेकर आया और झूठी शिकायत करने लगा कि उसकी इमारत हमारी इमारत से आने वाले पानी के कारण कई स्थानों में चू रही है और उसमें दरारें पड़ रही है। लोगों का दल बहुत चिल्लाने लगा और उन्होंने पड़ोसियों को इकट्ठा कर लिया और वे सभी मुझ पर दबाव डालने लगे कि उस इमारत की मरम्मत के लिए और दीवारों को रंगने के लिए मैं बड़ी रकम दूं। परंतु मेरे पास इतना अधिक पैसा नहीं था। कुछ लोग आगे आकर कहने लगे कि उस व्यक्ति की मांग सही नहीं है। परंतु जो कुछ हमने समझाया उसे उन्होंने नहीं सुना और कहने लगे कि रविवार की आराधना सभा में समस्या और उपद्रव उत्पन्न करेंगे। हमारी कलीसिया के सदस्यों ने उनकी मांग स्वीकार नहीं की।

मैं अपने प्रार्थना के कमरे में गया और मैंने घुटने टेककर परमेश्वर से बिनती की कि वह उन लोगों के साथ न्याय करने के लिए अपने स्वर्गदूतों को भेजे जो प्रभु की कलीसिया को नुकसान पहुंचाना चाहते थे।

जब मैं प्रार्थना कर रहा था, तब प्रभु ने मेरे जीवन में हस्तक्षेप किया। प्रभु ने मुझे मेरे प्रारम्भिक दिनों के पास्टर जी. सुंदरम की शिक्षा का स्मरण दिलाया, "हो सकता है कि दूसरे लोग करें... परंतु हमें नहीं करना चाहिए..." प्रभु ने मेरे मन मे डाला कि उस पड़ोसी की मांग के अनुसार मैं पूरी मरम्मत कराऊं। और उसी तरह प्रभु ने मुझे विश्वास दिलाया कि यदि मैं ध्यानपूर्वक उसकी सुनूंगा और उसके अनुसार करूंगा, तो वह एक दिन उस इमारत को खरीदने मे मेरी सहायता करेगा। उसके अनुसार, मैंने प्रभु की आज्ञा मानी और उस इमारत की पूरी मरम्मत कर पड़ोसी को संतुष्ट किया। यह मुझ पर एक बहुत बड़ा आर्थिक बोझ होने के कारण, मैं बहुत दुखी था। परंतु, परमेश्वर ने यह समझने में मेरी सहायता की कि अवश्य ही "परमेश्वर उपाय करेगा।"

छः महीनों के बाद, परमेश्वर ने मेरी सहायता की कि मैं वह पूरी ज़मीन उस सारी सामग्री के साथ जो मैंने पहले दी थी, खरीद लूं। जैसे ही हमने पड़ोस की यह ज़मीन खरीद ली, प्रभु ने मेरी सहायता की कि मैं उसे अपने वर्तमान इमारत के साथ जोड़ दूं और हमारी इमारत का आकार दुगुना कर दूं।

हमारा कैसा अद्भुत परमेश्वर है!... !!

हम अत्यंत आशीषित हैं...!!


## Echo of His Call Postal Courses

### 1. BIBLECOR

We offer a Postal Course on Basic Truths of The Bible to new christians and non-christians in English, Hindi & Tamil. You will get a course book entitled **New Life – For You!** with about 70 pages. After the completion of this course, you will get a certificate. **There will be no compulsory fees**. This courses is for candidates in India only.

### 2. THEOLOGICAL CORRESPONDENCE COURSE

Advanced Distance Education called **Theological Correspondence Course** is available for Pastors, Evangelists and Christian Leaders! A fee of Rs. 1000/- is charged. 7 Books with 142 Chapters are supplied. **Certificate in Ministry** will be awarded.

***For more details, write to us.***

**The Chairman, Nehemiah Bible College, Echo of His Call**
10, Mohammed Abdullah 2nd Street, Opp. Cricket Stadium,
Chepauk, Chennai - 600 005, India.
**Ph.: (044) 2852 8282, 2852 9293, 2854 7766, Cell : (+91) 95661 31858, 97908 05460 E-mail : biblecor@yahoo.co.in**

RNI NO. 63656/95, Postal Regn. No. TN/CH/(C)/202/18-20 WPP NO. TN/PMG(CCR)/WPP-222/18-20

# एको ऑफ हिज़ कॉल

१६ भाषाओं में मासिक पत्रिकाएं, पत्राचार पाठ्यक्रम, कलीसिया रोपन, ग्रामीण अंग्रेज़ी हायस्कूल, सुसमाचार छापखाना, क्रूसेड, सेमिनार, समाज सेवा आदि।

**वार्षिक शुल्कः रु. १००/-**

**आजीवन शुल्कः रु. २,०००/-**

**एको ऑफ हिज़ कॉल** की गतिविधियां आपके समान परमेश्वर के लोगों के स्वेच्छा दानों और भेंटों से पूरी की जाती हैं। आप परमेश्वर की अगुवाई के अनुसार **एको ऑफ हिज़ कॉल** और उसके सारे कार्यक्रमों

कलीसिया की स्थापना के लिए हमें आपकी सहायता की ज़रूरत है।

अगर आप **एको ऑफ हिज़ कॉल** मासिक पत्रिका नियमित रूप से प्राप्त करना चाहते हैं तो कृपया हमें लिख भेजें। जब कभी अपना पता या ई-मेल बदलें तो कृपया अपने पुराने एवं वर्तमान पते के बारे में अवश्य सूचना दें।

**एको ऑफ हिज़ कॉल** सेवकाई १६ भाषाओं की मासिक पत्रिका हमारे वेबसाइट पर भी उपलब्ध है। आप इस साइट पर जाकर और उसे डाऊनलोड करके उसे पढ़ सकते हैं और आशीष पा सकते हैं।

**एको ऑफ हिज़ कॉल** सेवकाई के लिए आपके पत्र, बिनती, प्रार्थना आर्थिक सहायता आदि (डी. डी. चेक, मनिऑर्डर आदि द्वारा) नीचे दिए गए पते पर भेज सकते हैं और आशीष पा सकते हैं।

कृपया अपना लैंड लाईन फोन/सेल फोन क्रमांक और ई-मेल पत्ता आवश्यक सुधार के लिए भेजें।

**ECHO OF HIS CALL**

10, Mohammed Abdullah 2nd Street, Chepauk, Chennai- 600 005, India.

**Phone :** (+91-44) 2852 8282, 2852 9293, 2854 7766

**CELL : (+91) 95661 31858 / 97908 05460**

**Email :** sam@echoofhiscall.org / biblecor@yahoo.co.in

**Website :** www.echoofhiscall.org / www.echoofhiscall.com

**आप अपनी भेटों को ऑन-लाईन भी भेज सकते हैं।**

## कृपया हमारे मुख्यालय में हो रहे सेवाकार्यों के लिए प्रार्थना करें!

| | |
|---|---|
| १. प्रार्थना सेवा | : २४ घंटे |
| २. **बाइबलकोर** - बाइबल पत्राचार पाठ्यक्रम : अंग्रेजी, तमिल, हिन्दी | |
| ३. **बुलावे की प्रतिध्वनि (एको ऑफ हिज़ कॉल)** - मासिक पत्रिका अंग्रेजी, तमिल, मलयालम, तेलुगू, हिन्दी, कन्नड, मराठी, गुजराती, बगाली, उड़िया, नेपाली, आसामी, पंजाबी, उर्दू, सिन्हाला, अफ्रीकान | |
| ४. नहेम्याह बाइबल कॉलेज (दो केन्द्र) | |
| ५. थियोलॉजिकल प्रशिक्षण कोर्स - अंग्रेजी एंवतमिल | |
| ६. ग्रेट कमिशन पार्टनर्स | |
| ७. प्रशिक्षण कार्यक्रम | |
| ८. फिल्म सेवा और सुसमाचार सभाएं | |
| ९. साहित्य वितरण और फॉलो-अप | |
| १०. सुसमाचार साहित्य मुद्रणालय | -प्रकाशन |
| ११. सेंट पॉल्स मैट्रिक्युलेशन स्कूल | - विलेज इंग्लीश स्कूल |
| १२. सण्डेस्कूल | रविवार प्रातः ८.३० बजे |
| **१३. तमिल आराधना** | **रविवार प्रात ५.०० बजे - ७.०० बजे १०.००बजे** |
| **१४. तेलुगू आराधना** | **रविवार सायं ४.०० बजे** |
| **१५. हिन्दी आराधना** | **रविवार सायं ५.०० बजे** |
| **१६. मलयालम आराधना** | **रविवार सायं ५.०० बजे** |
| **१७. अंग्रेजी तथा तमिल आराधना** | **रविवार सायं ६.०० बजे** |
| १८. लघुपत्रिकाओं का वितरण | रविवार दोपहर २.३० बजे |
| १९. पादरियों द्वारा सलाह मशवरा | रविवार सायं ४.०० बजे |
| २०. महिलाओं की प्रार्थना सभा | बुधवार सायं ५.३० बजे |
| २१. सप्ताह के मध्य बाइबल अध्ययन | बुधवार सायं ६.३० बजे |
| २२. पुरुषों की प्रार्थना सभा | शुक्रवार सायं ६.३० बजे |
| २३. शनिवार के दिन की आराधना | शनिवार सायं ५.०० बजे |
| २४. कर्मचारियों की सभा | शनिवार सायं ६.०० बजे |
| २५. गृह सभाएँ | मंगल.गुरु सायं ६.३० बजे |
| २६. विशेष पवित्र सहभागिता-प्रभुभोज | प्रतिमाह के १ ला दिवस पर प्रातः ५.३० बजे |
| २७. कर्मचारी समीक्षा सभा | प्रथम शनिवार सायं ५.३० बजे |
| २८. पालकों की प्रार्थना सभा | प्रथम रविवार सायं ४.०० बजे |
| २९. रात्रकालिन प्रार्थना | द्वितीय शुक्रवार रात ९.३० बजे |
| ३०. उपवास के साथ प्रार्थना | प्रथम शनिवार सायं ९.३० बजे |
| ३१. पवित्र प्रभुभोज | द्वितीय रविवार की उपासनाएँ |
| ३२. प्रातःकालीन आराधना | प्रतिदिन प्रातः ५.०० बजे |
| ३३. कर्मचारी वर्ग द्वारा प्रार्थना आराधना | प्रतिदिन प्रातः ९.०० बजे |
| ३४. कार्यालय | प्रातः ९.०० बजे से सायं ९.०० बजे (रविवार छोड़कर) |

**RNI NO. 63656/95**
**Postal Regn. No. TN/CH/(C)/202/18-20**
**WPP NO. TN/PMG(CCR) / WPP- 222/18-20**
**Date of Publication: Second week of every month**
**Date of Posting : 8 th & 9 th of every month**
**Posted at "Egmore RMS / 1 Patrika Channel"**
**on 9th SEPTEMBER 2020**
**If un-delivered please return to:**
**ECHO OF HIS CALL (HINDI)**
**P.O. Box No. 2957,**
**Chepauk, Chennai - 600 005, INDIA.**
**Phone: (+ 91- 44) 2852 8282, 2852 9293, 2854 7766**

***JESUS LOVES YOU!***

To

*GOD BLESS YOU!*

Owned and published by **S. Sam Selva Raj** from 18, Mohammed Abdullah Sahib Street, Chepauk, Chennai-600 005 and printed by him at **Echo of His Call Printers** 18, Mohammed Abdullah Sahib Street, Chepauk, Chennai-600 005. Editor: **S. Sam Selva Raj.**